देवा रे गणपति देवा रे। Subeg Singh

गौरी माँ के लाल पधारे देवो के इक देव हमारे रिद्धि सिद्धि सुख के दाता आज चलें खुद संग हमारे देवा रे गणपित देवा रे मैंने आस लगाई मैंने कृपा पाई तेरी एक दया से मैंने तो मंज़िल पाई

वेदों ग्रंथो में तेरा आदर कृपा दया के तुम हो सागर पाप बढ़ा जब जब धरती पर सत्य किया तुमने ही उजागर देवा रे गणपित देवा रे मेरे देव गजानन मेरे विघ्न विनाशन मेरे मंगल मूर्ति मेरे शुभ गन कानन

लाल बाग़ के तुम हो राजा मस्तक पे अब तेज विराजा दुखियाँ निर्बल के रखवाले तोड़ दिए अज्ञान के ताले देवा रे गणपित देवा रे गौरी माँ के लाल पधारे देवो के एक देव हमारे रिद्धि सिद्धि सुख के दाता आज चलें खुद संग हमारे

 $\frac{\text{https://bhaktivandana.com/lyrics/\%e0\%a4\%a6\%e0\%a5\%87\%e0\%a4\%b5\%e0\%a4\%be-\%e0\%a4\%b0\%e0\%a5\%87-}{\%e0\%a4\%97\%e0\%a4\%a3\%e0\%a4\%a6\%e0\%a4\%a6\%e0\%a4\%b5\%e0\%a4\%b6-\%e0\%a4\%b6-\%e0\%a5\%87-subeg-singh/$